रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १२ सम्पादक – प्यारेलाल अंक २

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ८ फरवरी, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

यमुना-तटकी राखमें से

हमसे बोलने, हमें धीरज बँधाने, हमें बढ़ावा देने और हमारी रहनुमाअी करनेके लिअे महात्मा गांधी आज हमारे बीच ज़िन्दा नहीं हैं। मगर क्या अुन्होंने अक्सर हमसे यह नहीं कहा कि शरीर अस्थायी है और अेक न अेक दिन अुसका नाश अवश्य होता है, और सिर्फ आत्मा ही अमर है और अुसका कभी नाश नहीं होता? क्या अुन्होंने हमसे यह नहीं कहा था कि जब तक भगवानको मेरे अिस शरीरसे काम लेना होगा, तब तक वह अिसे बनाये रखेगा? हो सकता है कि अुनकी आत्मा शरीरके बन्धनोंसे छूटकर ज़्यादा आज़ादीसे काम करे और अैसे साधन पैदा करे जो अुनके अधूरे कामको पूरा कर सकें। हो सकता है कि यमुनाके किनारे पड़ी हुअी अुनकी राखमेंसे अैसी ताक़तें अुठ खड़ी हों, जो ग़लतफ़हमी और अविश्वासके सारे कुहरे और बादलको अुड़ा दें और अैसी शान्ति और मेल क़ायम करें, जिसके लिअे वे जिये, अुन्होंने काम किया और हाय! अन्तमें हत्यारेकी गोलीके शिकार बने।

जन्म: २–१०–१८६९ बापू अवसान: ३०–१–१९४८

हिन्दू धर्ममें या सच पूछिये तो अिन्सानियतमें जो महान् और श्रेष्ठ है, क्या वे अुस सबके सार और साकार रूप नहीं थे? और तिसपर क्या वह अेक हिन्दूका ही हाथ नहीं था, जिसने अुस हृदयको अपनी गोलीका निशाना बनाया, जो जाति, धर्म और देशकी सीमाओंसे परे था? अिस पापका मक़सद क्या हो सकता है? क्या यह हिन्दू धर्मको बचानेके लिअे किया गया है? क्या अिससे हिन्दू समाजकी सेवा होगी? क्या अैसा करनेसे हिन्दू धर्म बचा लिया गया? क्या अिस तरह हिन्दू समाजकी सेवा हो गअी? हिन्दू धर्म और हिन्दू समाजके विविधताभरे अितिहासके बेशुमार पन्नोंको देख जाअिये, आपको अैसे बुरे और धोखेसे भरे हुअे कामका दूसरा अुदाहरण नहीं मिलेगा। यह अुस अितिहासपर अैसा अमिट कलंक है, जो किसी तरह नहीं धुलेगा।

हम दुःखी हैं। हम भौंचक्के-से हैं। तो क्या हम निराश हो जायँ? गांधीजीका शरीर अब हमें देखनेको नहीं मिलेगा। अब हम अुनकी आवाज़ नहीं सुन सकेंगे। मगर क्या वे अेक बेशक़ीमती मीरास हमारे लिअे नहीं छोड़ गये हैं? अपने मार्गमें आगे बढ़ाने और सहारा देनेके लिअे क्या अुन्होंने हमारी काफी रहनुमाअी नहीं की और हमें काफी प्रेरणा नहीं दी है? अिस संकटके समय अुनकी ललकार हममें फिरसे कर्त्तव्यकी भावना जागृत करे। अुन्होंने मिट्टीमें से योद्धा पैदा किये। ग़ैरअिन्साफ़ी, दमन और ग़ुलामीके ख़िलाफ़ अपनी जीवनभरकी लड़ाअीमें अुन्होंने अपूर्व हथियारोंका कुशलतासे अुपयोग किया। अच्छाअीको क़ायम करनेके लिअे हिन्दुस्तानको वैसी ही बहादुरीकी, वैसी ही खतराँकी अुपेक्षा करनेकी और अुसी तरह नतीजोंकी तरफ़से बेफ़िक्र रहनेकी ज़रूरत है। गांधीजीने अुसे क़ायम करनेके लिअे अपनी जान

www.vinoba.in

दे दी। क्या हम गांधीजीका, अुनके अवसानके बाद अुसी तरह अनुसरण नहीं करेंगे, जिस तरह हम अुनके जीतेजी करते थे?

यह क्रोध करने या बदला लेनेका वक्त नहीं है। गांधीजीके अुपदेशमें अिनमेंसे किसीके लिअे भी कोअी अवकाश या जगह नहीं है। जरूरत अिस बातकी है कि हम आत्माका हनन करनेवाली अुस संकुचित साम्प्रदायिकताको जड़ मूलसे अुखाड़ फेंकनेका पक्का निश्चय कर लें, जिसकी वजहसे यह पाप सम्भव हुआ है। गांधीजीके सियासी, सामाजिक या अर्थिक कामोंके हमेशा दो पहलू रहे हैं — नकारात्मक और स्वीकारात्मक। बुरी अिच्छाओंका अवश्य ही खात्मा कर देना चाहिये, ताकि अच्छी भावनाअें अुनकी जगह ले सकें। फ़िरकेवाराना अविश्वास और झगड़े खत्म होने चाहिये और आपसी मेल-मिलाप और भाअीचारा क़ायम किया जाना चाहिये। यह गांधीजीकी अन्तिम अिच्छा थी। हमें अुनकी यह अिच्छा अवश्य पूरी करनी चाहिये और हम अुसे पूरी करके रहेंगे। ३-२-'४८

(अंग्रेजीसे) राजेन्द्रप्रसाद

बापू जीवित हैं

कहते हैं समुद्र-मन्थनमें से अमृत निकला। हीरे-जवाहरात निकले और हलाहल जहर निकला। जहर अितना घातक था कि सारे जगतका नाश कर सकता था। अुसे क्या किया जाय? सब अिस बारेमें चिन्तित थे। शिवजी आगे बढ़े और अुन्होंने वह जहर पी लिया। हिन्दुस्तानके समुद्र-मन्थनमें से आज़ादीका अमृत निकला। साथ ही, आपस आपसकी मारकाटका, दुश्मनीका, वैरका, हिंसाका जहर भी निकला। गांधीजीने अिसके सामने अपनी आवाज़ बुलन्द की। लोग अपनी मूर्छामें से चौंके, लेकिन जागे नहीं। पाकिस्तानके लोगोंके कानोंमें भी वह आवाज़ पहुँची। बापूकी आवाज़ अकेली गगनमें गूँज रही थी: "अिस आगको बुझाओ, नहीं तो दोनों अिस आगमें भस्म हो जाओगे।" अुनका हृदय दिन-रात पुकारता था: "हे अीश्वर, अिस ज्वालाको शान्त कर, नहीं तो मुझे अिसमें भस्म होने दे। मैं अिसका साक्षी नहीं बनना चाहता।"

जो बापू अनेक अुपवासोंमें से, अनेक हमलोंसे बच निकले थे, वे अपने ही अेक गुमराह पुत्रकी गोलीसे न बच सके। पुत्रके हाथसे हलाहलका प्याला लेकर वे पी गये, ताकि हिन्दुस्तान ज़िन्दा रह सके। किसीने कहा, जगतने दूसरी बार अीसाका सूलीपर चढ़ाना देखा है!

मुझे जब यह खबर मिली तब मैं मुलतानमें थी। बहावलपुरियोंकी बापूको अितनी चिन्ता थी कि अुन्होंने मुझे लेसली कॉस साहबके साथ बहावलपुर भेजा था। वहाँ डिप्टी कमिश्नरकी पत्नीने बहुत प्यारसे पूछा: "गांधीजी अब कैसे हैं? हमारे पास कब आवेंगे?" मैंने कहा: "जब आपकी हुकूमत चाहेगी।"

हर जगह गरीब-अमीर मुसलमान प्यारसे गांधीजीकी तबीयतके बारेमें पूछते थे। अुनके सवाल होते: अुपवासके बाद गांधीजीको ताकत आअी या नहीं? वे क्या खाते हैं? वगैरा। अुनकी मुहब्बत जाहिर थी। गांधीजी अुनके दोस्त हैं, अिस बारेमें अुन्हें शक नहीं था। जिन्हें अिस्लामका पहले नम्बरका दुश्मन मुसलमान अखबारोंने कहा था, अुनके बारेमें पाकिस्तानमें यह भाव देखकर मुझे खुशी हुअी। मैंने हर्षसे सोचा: बापूको यह सब सुनाअूँगी, तो अुन्हें कितना अच्छा लगेगा?

और शामको ६ बजेके करीब डिप्टी कमिश्नर साहबकी पत्नी हाँफती, हाँफती आअी और बोली — "दुनिया किधर जा रही है? गांधीजीको गोलीसे मार दिया!" सुनते ही मेरे हाथ-पाँव ठण्डे पड़ गये। मैं सुन्न बैठ गअी। किसी दूसरेने कहा: "नहीं, नहीं, यह तो अफवाह है। हम दिल्लीको फोन करके पक्की खबर निकालेंगे। घबराअिये नहीं।" मैंने कहा: "नहीं, मुझे अभी लाहौर जाना है। कोअी गाड़ी दिलाअिये। सच्ची खबर हो या झूठी, मैं जल्दी-से-जल्दी दिल्ली पहुंचना चाहती हूँ।"

डी० सी० ने अपनी मोटर दी। सुनसान सड़कपर मोटर पूरी रफ्तारसे चली जा रही थी। आकाशमें चाँद निकल आया था। चारों तरफ शान्तिका साम्राज था। हृदयसे बारबार आवाज निकलती थी: "नहीं, बापू जीवित हैं।" बुद्धि कहती थी, चार गोलियाँ चलीं, यह बात बनावटी नहीं हो सकती। मगर मनुष्य निराशामें भी आशाको पकड़े रखनेका आदी है। मैंने मनको समझा दिया — चार गोलियाँ चलीं, मगर क्या जाने लगीं या न लगीं? शायद बापू घायल हों भी, मगर वे जीवित हैं। हृदय कहता है, वे मरे नहीं हैं।

सुबह ६ बजे हमारी मोटर लाहौर पहुँची। किसीसे कुछ भी पूछनेकी हिम्मत न हुअी। डर था, कहीं कोअी कह न दे कि जो अफवाह सुनी थी, वह सच है। आखिर अेक दोस्तने आकर मेरी कल्पनाका महल ढा दिया। वे आँसू बहाकर सहानुभूति बताने लगे। अुनको क्या कल्पना थी कि अुनके सान्त्वनाके शब्द मुझे कितनी गहरी चोट पहुँचा रहे थे! अितनेमें रेडियोपर पंडितजीकी दुःखभरी आवाज सुनी और मेरी रही सही आशा भी टूट गअी। विश्वास हो गया कि बापू नहीं रहे। अभी तक जो आँसू दबे हुअे थे, वे थामे न थमे। हम अनाथ बन गये!

हवाअी अड्डेपर विमानके अिन्तज़ारमें क्षण क्षण सदियों अैसा लगने लगा। वहाँ हिन्दू-मुसलमान सब गमगीन थे। वहाँके अफसरोंने मेरे सुभीतेका ज्यादासे ज्यादा खयाल रखा। अुन्होंने कहा: "हम खुशीसे पेशावरसे स्पेशल हवाअी जहाज बुला लेते। लेकिन अुससे आपके वक़्तमें कोअी खास बचत नहीं होगी।" लेकिन जब हवाअी जहाज़ आ गया, तो अुन्होंने १० मिनिटमें अुसे रवाना करा दिया। पाअिलॉट भी खूब तेजीसे लाया। हम ११ के क़रीब दिल्लीके वेलिंग्डन हवाअी अड्डेपर पहुँच गये। मियाँ अिफ्तखारुद्दीन भी हमारे साथ आये थे। वे और मैं तुरन्त मोटरमें बैठकर बिड़ला-भवनकी तरफ़ चले। कॉस साहब सामानके लिअे ठहरे। डबडबाअी आँखोंसे मोटरमें मियाँ साहबने कहा — "बापूका खून हम सबके सिरपर है। हम सबके हाथ खूनसे रँगे हुअे हैं।" मुझे कअी अैसी चर्चाओंका खयाल आया, जिनमें भले लोगोंने बापूकी टीका की थी कि वे मुसलमानोंका पक्षपात करते हैं। अच्छे अच्छे लोग कभी कभी सोचते थे; "कहाँ तक मार खाते जावें?" बापूका बारबार यह कहना कि बुराअीका बदला भलाअीसे दो, अुनके गले नहीं अुतरता था। मैंने सोचा, हममें से सबको कभी न कभी पाकिस्तानकी ज्यादतियोंपर गुस्सा आया था। मनमें खयाल आया था कि लातोंके भूत बातोंसे नहीं मानते। ये सब विचार बापूका खून करनेवालोंके पक्षका समर्थन करनेवाले थे। अिसलिअे बापूका खून हम सबके सिरपर था। खूनी अिससे भी आगे गया। जो अिन्सान अींटका जवाब पत्थरसे देनेसे रोक रहा था, अुसे अुसने हटा दिया। क्या बापूके जानेके बाद हिन्दू-मुसलमानोंकी आँख खुलेगी? बापूकी बात हम मानेंगे?

गाड़ी बिड़ला-भवनके पिछले दरवाजेसे दाखिल हुअी। अुधर भी बहुत भीड़ थी। दूरसे अेक अूँचा फूलोंका ढेर दिखा। मैं भीड़को पूरे जोरसे चीरती हुअी हाँफती हाँफती वहाँ पहुँची, जहाँ पालकी रवाना होनेके लिअे तैयार थी। वहाँ सरदार अपने दिवंगत स्वामीके पाँवोंके पास अुदास और गंभीर बैठे थे। अुन्होंने मुझे अूपर चढ़ाया। फूलोंमें से बापूका चेहरा ही दिखता था। हमेशाकी तरह मैंने अपना सिर अुनकी छातीपर रख दिया। बिना सोचे अन्दरसे भावना अुठी, अभी बापू अेक प्यारकी चपत लगा देंगे, पीठपर जोरकी अेक थपकी लगा देंगे! मगर मैंने तो अुनकी आखिरी थपकी बहावलपुर जाते समय ही ले ली थी।

सिरके पास मनु और आभा खड़ी थीं। 'सुशीला बहन! सुशीला बहन!' पुकारकर वे फूट फूटकर रोने लगीं। आँसुओंमें से मैंने देखा बापूका चेहरा पीला था, पर हमेशाकी तरह शान्त था। वे गहरी नींदमें सोये दिखते थे। अपने आप मेरा हाथ अुनके माथेपर चला गया। अुनके चेहरेको मैंने छुआ। वह अभी भी मुझे गरम लगा, जीवित लगा। मेरा सिर फिरसे अुनके चेहरेपर झुक गया। माथा अुनके गालको जा लगा। किसीने पुकारा — अब सब नीचे अुतरो।

www.vinoba.in

नीचे सिरकी तरफ़ पंडितजी खड़े थे। दुःख और गमकी गहरी रेखाएँ अुनके चेहरेपर थीं। मुँह सूखा हुआ था। अुन्होंने प्यासे हम तीनोंको नीचे अुतारा। पुराने जमानेमें महादेवभाअी, देवदासभाअी और प्यारेलालजी तीनों बापूके साथ हुआ करते थे—त्रिमूर्त्ति कहलाते थे। अुसी तरह कुछ महीनोंसे आभा, मनु और मैं बापूके साथ त्रिमूर्त्ति-सी बन गअी थीं। अुन तीनोंमें महादेवभाअी बड़े थे, अिन तीनोंमें मैं। दोनों लड़कियाँ दोनों तरफसे मुझे लिपट गअीं। अेक-दूसरीको सहारा देते हुअे हम आगे बढ़ीं। बापू चाहेंगे राम-धुन चले, सो रामधुन शुरू की। लेकिन बहुत चल न सकी। मणि बहन बार-बार ध्यान खींचती थीं: रोना नहीं चाहिये। सिक्ख भाअियोंने गुरु ग्रन्थसाहबके शब्द बोलने शुरू किये। हम सब अुनके पीछे रामनाम बोलने लगे।

कुछ देर बाद हम लोग पीछे बापूकी गाड़ीके पास आ गये। अुस गाड़ीके स्पर्शमें बापूका स्पर्श था। दोनों तरफ लाखों जनता खड़ी थी। हर दरख़्तकी हर टहनीपर लोग बैठे थे। 'महात्मा गांधीजीकी जय'के नादसे गगन गूँज रहा था। जैसे जीवनमें वैसे मृत्युमें निन्दा और स्तुतिसे अलिप्त बापू सो रहे थे। जीवनमें हम लोगोंको चुप कराते थे। जयनादसे भी अुनके कानोंको तकलीफ पहुँचती थी। वे कानोंको अुँगलियोंसे बन्द कर लिया करते थे। कान बन्द करनेको हमें साथ रूअी रखनी होती थी। मगर आज अुसकी ज़रूरत न थी। किसीको चुप करानेकी ज़रूरत न थी। सबकी आँखें गीली थीं। मनमें आया, क्या अपनी भावनाओं हम आँसू बहाकर धो डालेंगे? क्या जयघोष करके ही बैठ जायेंगे? या क्या ये भावनायें कार्यरूपमें भी परिणत होंगी?

शामको जुलूस जमनाजीके किनारे पहुँचा। अींटोंके अेक छोटेसे चबूतरेपर लकड़ियाँ रखी थीं। जिस तख़्तेपर बापू बैठा करते थे, अुसीपर अुनका शव था। अुसे लाकर लकड़ियोंपर रखा गया। ब्राह्मणने कुछ मंत्र पढ़े। हम लोगोंने छोटीसी प्रार्थना की। देवदास भाअीने बापूके पाँवपर सिर रखकर प्रणाम किया। अुनके बाद हम सबने प्रणाम किया। हृदयसे अेक ही पुकार निकल रही थी: बापू, मेरे अपराध क्षमा करना। मेरी भूलचूक, त्रुटियाँ क्षमा करना। जीवनमें कितनी बार आपको सताया, आपको मानवी पिता मानकर आपसे झगड़ा किया। आपके साथ दलीलें कीं। बापू, क्षमा करना! क्षमा करना!! क्षमा करना!!! मैं चितासे दूर हटकर बैठ गअी। मैं ज़्यादा देख न सकी। मनमें मैं गीताके ये श्लोक दोहराती रही:

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि॥ १॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
अेकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥ २॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः॥३॥
तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥ ४॥

बापू, आपने जो अगाध प्रेम मुझपर बरसाया; जो अगाध विश्वास बताया; भूल पर भूल क्षमा की; तुच्छ, अज्ञान, मतिहीनको, अपनाया; सिखाया; अपनी बेटी बनाया; अुसके लायक़ बनाना। अेक बार बापूने महादेवभाअी और भाअीसे बातें करते हुअे कहा था—"सुशीलाने सबसे आखिरमें मेरे जीवनमें प्रवेश किया, मगर वह सबसे निकट आअी। मुझमें समा गअी है।" हे प्रभु, अुसी समय तूने मुझे क्यों न अुठा लिया! अुसके बाद सुशीला अुनसे दूर चली गअी। बापूकी बातपर अुसके मनमें शंका आने लगी, मगर बापूने धीरजसे अुसकी शंकाओंका निवारण करनेका प्रयत्न किया। अुसे अपनेसे दूर न जाने दिया। अेक बार कहने लगे—"तूने 'Hound Of Heaven' की कविता पढ़ी है। तू मुझसे भाग कैसे सकती है? मैं भागने दूँ तब न?" अिस नालायक़ बेटीके प्रति अितना प्रेम! हे प्रभो, जो योग्यता अुनके जीवन-कालमें मुझमें न थी, वह अुनके जानेके बाद दोगे?

शवपर चन्दनकी लकड़ियाँ रखने लगे। सुगन्धित सामग्री डालने लगे। मैं जाकर सरदार काकाके पास बैठ गअी। घुटनोंमें सिर रख लिया और देख न सकी। सारा जगत चक्कर खा रहा सा लगता था। भीड़का ज़ोरसे धक्का आया। मनु, आभा, मैं और मणि बहन पास बैठी थीं। सरदारने हमें साथ लेकर अुस भीड़में से निकालनेकी कोशिश की। धक्केपर धक्का आता था। हम गिरते-पड़ते मुश्किलसे बाहर निकले। अेक मिलिटरी ट्रकमें बैठे। सरदार काका और सरदार बलदेवसिंहजी साथ थे। ट्रक चली। आभाने मेरा हाथ खींचा। दूरसे चिताकी ज्वालाकी लपटें आकाशको जा रही थीं। हृदय पुकार अुठा, हे प्रभो, अिस अग्निमें हमारे दोष, हमारी कमज़ोरियाँ, भस्म हो जावें, ताकि हम बापूके बताये मार्गपर दृढ़तासे आगे बढ़ सकें। जिस अग्निको शान्त करनेमें अुनके प्राण गये, वह अिस अग्निने साथ शान्त हो। रातको बिड़ला-भवनमें जिस गद्दीपर बैठकर बापू काम किया करते थे, अुसपर रखी बापूकी फोटोके सामने बैठे मनमें विचार आने लगा—कल सारी रात मोटरमें बैठे हृदयसे जो ध्वनि निकल रही थी: "बापू जीवित हैं। बापू जीवित हैं।" वह क्या गलत थी? वह ध्वनि अितनी स्पष्ट थी, मगर क्या सब कल्पनाका ही खेल था? अुत्तर मिलाः नहीं, बापू जीवित हैं। सचमुच जीवित हैं। तुम्हारे अेक अेक विचारको, अेक अेक आचारको देख रहे हैं। दूसरे दिन कॉस साहब अंग्रेजी कविताकी कुछ लाअिनें लिखकर दे गये। अुनमें आखिरी लाअिनोंका भाव कुछ अैसा था:

"याद रखो, अब अुनके हथियार सिर्फ तुम्हारे हाथ और पाँव हैं। वे देखते हैं। सँभालना कि किस चीज़को तुम छूते हो, कहाँ पर कदम रखते हो।"

अेक दफ़ा बापूको किसीने कहा था—"आपके अनुयायियों, रचनात्मक कार्य करनेवालोंमें कुछ बेबसी-सी पाअी जाती है। अुनमें वह तेज नहीं, जिससे वे आपका सन्देश घर-घर, गाँव गाँव, देशभरमें पहुँचायें।" बापू गंभीर हो गये। कहने लगे—"हाँ, आज वे बेबस-से लगते हैं। मेरे जीवनमें दूसरा हो नहीं सकता। अुन सबका व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्वके नीचे दबा हुआ है। वे बात बातमें मुझे पूछते हैं। मगर मेरे बाद, मैं आशा रखता हूँ, अुनमें वह तेज और शक्ति अपने आप आ जावेगी। अगर मेरे सन्देशमें कुछ है, तो वह मेरे जानेके बाद मर नहीं जायगा।" हम लोगोंसे अेक बार कहने लगे कि वे हमसे क्या-क्या आशाएँ रखते हैं। आगाखाँ महलमें अुपवासकी बातें चल रही थीं। वे न रहें, तो हमारा क्या धर्म होगा, हमें क्या करना होगा, वे हमें समझा रहे थे। हमसे वह चर्चा सहन नहीं हुअी। मैं बोल अुठी—"नहीं बापू; यह सब न सुनाअिये। हमारी तो यही प्रार्थना है कि आपके देखते देखते महादेवभाअीकी तरह हमें भी अीश्वर अुठाले। आपके बाद कुछ भी करनेकी हमारी शक्ति नहीं।" बापू और ज़्यादा गंभीर हो गये। बोले—"महादेवकी तरह तुम सब मुझे छोड़ते जाओगे, तो मैं कहाँ जाअूँगा? अैसे विचार करना तुम्हें शोभा नहीं देता। और तुम लोगोंमें आज शक्ति नहीं, मगर अीसाकी मृत्युके समय अुनके शिष्योंमें शक्ति थी क्या? दृढ़ विश्वाससे, सच्चे हृदयसे, जो अीश्वर-परायण होकर कार्य करता है, शक्ति अुसे अीश्वर अपने आप दे देता है। जो अपने आपको शून्यवत् करके सत्यकी आराधना करता है, अुसका मार्गदर्शन प्रभु अपने आप करता है।" क्या हम अपने आपको शून्यवत् कर सकेंगे?

कराची, ५-२-'४८ सुशीला नय्यर

बिनती

'हरिजन'के पाठकोंकी तरफ़से मेरे पास लगातार बहुतसे पत्र आ रहे हैं, और चूँकि मेरे स्थायी पतेके सम्बन्धमें कुछ भ्रम है, अिसलिअे मैं अपना पूरा पता यहाँ दे रही हूँ:

आश्रम, पशुलोक,
पो० ऑ० हृषिकेश, जिला देहरादून, यू० पी०

पत्र लिखनेवाले भाअी भविष्यमें अिस पतेपर पत्र लिखनेकी कृपा करें।

किसान-आश्रम सहारनपुर जिलेमें अेक अलग संस्था है।

मीराबहन

www.vinoba.in

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २७-१-'४८

मुसलमान और प्रार्थना-सभा

प्रार्थना-सभामें गांधीजीने आज पूछा कि कितने मुसलमान हाज़िर हैं? अेक ही हाथ ऊपर अुठा। गांधीजीने कहा, अिससे मुझे सन्तोष नहीं होता। प्रार्थनामें आनेवाले सब हिन्दू और सिक्ख भाअी-बहन अपने साथ अेक अेक मुसलमानको लावें।

महरोलीका अुर्स

अुसके बाद महरोलीकी दरगाह शरीफ़में अुर्सके मेलेका ज़िक्र करते हुअे, जिसमें आज सुबह गांधीजी खुद गये थे, अुन्होंने कहा, किसीको वहाँ आने-जानेमें झिझक नहीं थी। मैंने जान बूझकर मुसलमान भाअियोंसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे, अुतने तो नहीं आ सके होंगे। तो अुन्होंने कहा, कुछ डर तो रहा ही होगा। हममें अैसे लोग भी हैं न, जो डर-सा बता देते हैं। वे कहते हैं, अलाहाबादमें कुछ हो गया है, वही यहाँ हुआ, तो हिन्दू क्या करेंगे? अिन्सान अिन्सानसे डरे, यह कितनी शर्मकी बात है! लेकिन कमसे कम मैंने अितना तो पाया कि जितनी तादाद वहाँ मुसलमानोंकी थी, अुतनी ही हिन्दुओंकी भी थी और अुनमें सिक्ख भी काफ़ी थे। पीछे अेक दुःखद बात भी मैंने देखी — वह दरगाह तो बादशाही ज़मानेकी है। आजकी थोड़े ही है। बहुत पुराने ज़मानेकी है, अजमेरकी दरगाह शरीफ़से दूसरे नम्बरपर आती है — मुख्य चीज़ वहाँका नक्काशीका काम ही था। वह बहुत खूबसूरत था। वह सब तो नहीं, लेकिन काफ़ी ढा दिया गया है। नक्काशीकी जालियाँ काफ़ी तोड़ डाली गअी हैं। मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ। मैं तो अुसे वहशियाना चीज़ ही कह सकता हूँ। मैंने अपने दिलसे पूछा, क्या हम यहाँ तक गिर गये हैं कि अेक जगहपर किसी औलियाकी कब्र बनाअी गअी है — और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारों रुपये अुसपर खर्च हुअे हैं — अुसको हम अिस तरह नुकसान पहुँचावें? माना कि अिससे भी बदतर पाकिस्तानमें हुआ है। यहाँ अेक गुना हुआ और वहाँ दस गुना। अिसका हिसाब मैं नहीं कर रहा। मेरे नज़दीक तो चाहे थोड़ा गुनाह करो, चाहे ज़्यादा; अुसकी तुलना मैं नहीं करता। वहाँ जो हुआ, वह शर्मनाक है। लेकिन सारी दुनिया अगर शर्मनाक बात करती है, तो क्या हम भी करें? अैसा नहीं करना चाहिये, यह आप भी मानेंगे।

मुझको पता चला है कि दरगाहमें हिन्दू और मुसलमान दोनों काफ़ी तादादमें आते हैं। और मिन्नत भी लेते हैं। जो औलिया यहाँ और अजमेर शरीफ़में हो गये हैं, वे अैसा बड़ा दर्जा रखते हैं। अुनके दिलमें हिन्दू-मुसलमानका कोअी मेदभाव नहीं था। यह तो अैतिहासिक बात थी और सच थी। मुझे झूठ बतानेमें किसीको कुछ फायदा नहीं। अैसे जो औलिया हो गये हैं, अुनका आदर होना ही चाहिये। पाकिस्तानमें क्या होता है, अुस तरफ हम न देखें।

सरहदी सूबेमें और ज़्यादा हत्याअें

आज ही मैंने अखबारोंमें देखा है कि पाकिस्तानमें अेक जगह १३० हिन्दू और सिक्ख कत्ल हो गये हैं और पीछे वहाँ लूट-पाट भी हुअी। किसने अुनको क़त्ल किया? सरहदी सूबेके ऊपर जो छोटी छोटी कौमें मुसलमानोंकी रही हैं, अुन्होंने बस अुनपर हमला किया और अुन्हें मार डाला। अुन लोगोंने कोअी गुनाह किया था, अैसा कोअी नहीं कहता। पाकिस्तानकी हुकूमतने जो बयान निकाला है, अुसमें यह भी कहा है कि कअी हमलावरोंको हुकूमतने मार डाला। जब वे कहते हैं, तब अुनकी बात हमें मान लेनी चाहिये। वहाँ जो हुआ, अुसपर हम गुस्सा करें और यहाँ भी मारना शुरू कर दें, तो वह वहशियाना बात होगी। आज तो आप भाअी भाअी होकर मिलते हैं, पर दिलमें अगर गन्दगी है, वैर या द्वेष है, तो जो प्रतिज्ञा आपने ली थी, अुसे झुठला देते हैं। पीछे हम सबकी खाना-खराबी होनेवाली है। यहाँ सबने यह महसूस किया। किसीसे मैंने पूछा तो नहीं, पर अुनकी आँखोंपरसे मैं समझ गया। पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ, अुसका हिसाब लेना हमारी हुकूमतका काम है। अुसका काम वह जाने। हमारा काम तो यही है कि अेक दूसरेका दिल साफ करनेकी जो कसम हमने खाअी है, अुसे कायम रखें, और अुसपर अमल करें।

अजमेरके हरिजन

अभी अजमेरमें राजकुमारी बहन चली गअी थीं। अुन्होंने वहाँकी अेक खतरनाक और हमारे लिअे बड़ी शर्मकी बात सुनाअी। वहाँ जो हरिजन रहते हैं अुनसे वहाँवाले काम लेते हैं, और वे करते हैं। मगर जिस जगह वे रहते हैं, वह बहुत गंदी और मैली है। वहाँ तो हमारी ही हुकूमत है और अच्छी खासी हुकूमत है। वहाँके हिन्दू और सिक्ख अमलदार अिसी हुकूमतके मातहत काम करते हैं। क्या अुन्हें खयाल नहीं आता कि अैसा शर्मका काम हम कैसे करते हैं? वहाँ सफेद पोशाक पहननेवाले बहुतसे हिन्दू हैं। वे खासा पैसा कमाते हैं और खुशहालीमें रहते हैं। वे क्यों न अेक दिनके लिअे हरिजन-बस्तीमें जाकर रहें? वे अगर वहाँ जायें, तो अुन्हें कय हो जायगी और अुनमें से कोअी तो शायद मर भी जायेंगे। अैसी जगह अिन्सानोंको रखना, क्योंकि अुनका यह गुनाह है कि वे हरिजनोंके घर पैदा हुअे, बहुत बुरी बात है। यहाँ दिल्लीमें भी मैं हरिजनोंकी बस्तीमें गया हूँ। वह भी बहुत खराब है। मगर अजमेर अुससे भी बदतर है। यह बड़ी शर्मकी बात है। क्या अैसी शर्मनाक बातें हम करते ही रहेंगे? हमने आज़ादी तो पाअी, लेकिन अुस आज़ादीकी तब तक कोअी क़ीमत नहीं, जब तक हम अिस तरहकी चीज़ें बन्द नहीं कर सकते। यह अेक दिनमें बन्द हो सकता है। क्या हम हरिजनोंको सूखी जगहमें नहीं रख सकते? वे मैला अुठानेका काम तो करें, लेकिन वे मैलेमें ही पड़े रहें, अैसा तो नहीं हो सकता। हमारी तो आज अक्ल मारी गअी है। हमारे पास हृदय नहीं रहा और हम अीश्वरको भूल गये हैं। अिसीलिअे तो गुनाहके काम करते जाते हैं। और पीछे हम अेक-दूसरोंका अैब निकालें, दूसरोंको दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

मीरपुरके दुःखी

अन्तमें अेक और बात कहना चाहता हूँ, और वह है मीरपुरके बारेमें। अेक दफा तो मैंने थोड़ासा कहा भी था। मीरपुर काश्मीरमें है। अब वह हमलावरोंके हाथमें है। वहाँ हमारी काफी बहनें थीं। अुन्हें वे अुठा ले गये हैं। अुनमें बूढ़ी भी हैं और नौजवान भी। वे अुनके कब्जेमें पड़ी हैं। अुन्हें वे बेआबरू भी कर लेते हैं, अिसमें मेरे दिलमें कोअी शक नहीं। खाना भी अुन्हें बुरा दिया जाता है। चन्द बहनें तो पाकिस्तानके अिलाकेमें हैं — गुजरात जिलेमें झेलम तक शायद पहुँची होंगी।

मैं तो कहूँगा कि जो हमलावर हमला कर रहे हैं, अुनमें भी कुछ तो मर्यादा या हद होनी चाहिये। मैं हमलावरोंसे कहता हूँ कि आप अिस्लामको बिगाड़नेके लिअे यह काम कर रहे हैं और कहते यह हैं कि आज़ाद काश्मीरके लिअे कर रहे हैं। कोअी खानेके लिअे लूटपाट करे, वह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन जो छोटी लड़कियाँ हैं, अुन्हें बेअिज़्ज़त करना, अुन्हें खाने और पहननेको न देना, यह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है? और पीछे पाकिस्तानमें जिन लड़कियोंको अुठाकर ले गये हैं, अुनके बारेमें मैं पाकिस्तानकी हुकूमतसे मिन्नत करूँगा कि अिस तरहकी जो भी लड़कियाँ हैं, अुन्हें वापिस करदें और अुन्हें अपने घरोंको जाने दें।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आये हैं। वे काफी तगड़े हैं और शरमिन्दा होते हैं। मुझे सुनाते हैं कि क्या वजह है कि हमारी अितनी बड़ी हुकूमत अितना सा काम भी नहीं कर सकती? मैंने अुन्हें समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी अिस बारेमें कोशिश

www.vinoba.in

कर रहे हैं और बहुत दुःखी हैं। लेकिन अुनके दुःखी होनेसे और अुनके कोशिश करनेसे भी क्या? जो लोग लुट गये हैं, ताराज हो गये हैं, जिन्होंने अपने रिश्तेदारोंको गँवा दिया है, अुनको कैसे सन्तोष दिलाया जाय? आज जो भाअी आया, अुसके १५ आदमी वहाँ कत्ल हो गये हैं। अुसने कहा, अभी जो वहाँ पड़े हैं अुनका क्या हाल होनेवाला है? मैंने सोचा कि दुनियाके नामसे और अीश्वरके नामसे वहाँ जो हमलावर पड़े हैं, अुनसे और अुनके पीछे पाकिस्तानसे भी यह कहूँ कि आप बिना किसीके माँगे अपने आप शोहरतके साथ अुन बहनोंको वापिस लौटा दें। अैसा करना अुनका धर्म है। मैं अिस्लामको काफ़ी जानता हूँ और मैंने अुस बारेमें काफ़ी पढ़ा भी है। अिस्लाम यह कभी नहीं सिखाता कि औरतोंको अुड़ा ले जाओ और अुन्हें अिस तरह रखो। वह धर्म नहीं, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, अीश्वरकी नहीं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २८-१-'४८

बहावलपुरके दोस्तोंसे

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने जिक्र किया कि बहावलपुरके कुछ भाअियोंकी शिकायत थी कि अुन्होंने मिलनेका समय माँगा था, पर अुन्हें समय नहीं दिया गया। गांधीजीने अुनके लिअे समय निकालनेका वचन दिया, और विश्वास दिलाया कि अुनके लिअे जो भी किया जा सकता है, किया जा रहा है। अुन्होंने कहा कि डॉ० सुशीला नय्यर और लेसली क्रॉस साहब बहावलपुर चले गये हैं और नवाबने अुनकी पूरी सहायता करनेके लिअे कहा है।

राजधानीमें शान्ति

भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमें तीनों जातियोंमें फिरसे शान्ति कायम हो गअी है। अिससे सारे हिन्दुस्तानमें हालत जरूर सुधरेगी।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

दक्षिण अफ्रीकाका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा — आप जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोग अपने हकोंके लिअे लड़ रहे हैं। वहाँ अिस तरह कोअी किसीके हक नहीं छीनता कि लोग कहीं जमीन न ले सकें; जहाँ रहना चाहते हों, वहाँ रह न सकें। हरिजनोंके हमने जरूर अैसे हाल कर दिये हैं। पर बाकी हिन्दुस्तानमें अैसा कुछ है ही नहीं। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामें तो अैसा है, अुसका मैं गवाह हूँ। अिसलिअे वे वहाँ हिन्दुस्तानका मान रखनेके लिअे और हिन्दुस्तानके हकोंके लिअे लड़ रहे हैं। बहुत तरीकोंसे वे लड़ सकते हैं। लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते हैं। अिसलिअे सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ रहे हैं। अुनके तार भी आ जाते हैं। वे बिना परवानेके कहीं जा भी नहीं सकते — जैसे नेटाल, ट्रान्सवाल, हिल स्टेट, केपकालोनी वगैरामें अैसा सिलसिला रहा है। दक्षिण अफ्रीका अेक खंड जैसा है; कोअी छोटा-मोटा मुल्क नहीं है। नेटालसे अगर परवाना मिले, तो वे ट्रान्सवाल जा सकते हैं, नहीं तो नहीं। तो अुन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है। क्यों हमारे अिधर अुधर जानेमें किसी तरहकी रुकावट हो? बहुतसे तो वहाँ चले भी गये, और मुझे कहना पड़ेगा कि अिस वक्त तो वहाँकी हुकूमतने कुछ शराफ़त बताअी है। अुन्हें अभी तक पकड़ा नहीं। ट्रान्सवालका जो पहला शहर आता है फाक्सेस, वहाँ वे चले गये हैं। आगे चलकर अुन्हें पकड़ सकते हैं, पर अभी तक पकड़ा नहीं है। हुकूमतके सिपाही तो वहाँ मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और अुन्हें कुछ कहा नहीं। वहाँ अुन्हें मोटर भी खड़ी मिली, जिसमें बैठकर वे आगे चले गये। और वहाँ जलसा हुआ, जिसमें अुनका स्वागत-सत्कार किया गया। मैंने सोचा कि अितनी खबर तो आपको दे दूँ। यह बड़ी बहादुरीका काम है। वहाँ हिन्दुस्तानी छोटी तादादमें हैं, लेकिन छोटी तादादमें रहते हुअे भी अगर सब हिन्दी सत्याग्रही बन जावें, तो अुनकी जय ही है। कोअी रुकावट अुनके आगे नहीं ठहर सकती। लेकिन अैसा अभी तक बना तो नहीं है। जैसे यहाँ, वैसे वहाँ सब तरहके लोग रहते हैं। वहाँ थोड़े हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। वे सब मिलजुल कर यह काम करते हैं। वे जानते हैं कि अिसमें कमानेकी कोअी बात नहीं। और मैले आदमियोंसे तो यह लड़ाअी लड़ी भी नहीं जाती। वे जोहान्सबर्ग तक पहुँच तो गये हैं। लेकिन आखिर तक तो बचे नहीं रह सकते, अैसा मेरा खयाल है। अुन्हें चलते ही जाना है, आखिर तक जाना है, जब तक कि पकड़े न जावें। पकड़नेका वहाँकी हुकूमतको हक है; क्योंकि सत्याग्रहमें यह चीज तो पड़ी ही है कि जब क़ानूनका भंग किया जाय, तब अुन्हें पकड़ सकते हैं, और जेलके भीतर जाकर वे क़ानूनकी पाबन्दी करते हैं। मैं तो अितना ही कहूँगा कि हमारी तरफ़से अुन्हें धन्यवाद मिलना ही चाहिये, और वह है। मैं जानता हूँ कि अिस बारेमें दूसरी आवाज़ निकल ही नहीं सकती। वहाँकी हुकूमतसे भी मैं कहता हूँ कि अैसे जो लोग लड़ते हैं, अितनी शराफ़तसे लड़ते हैं, अुन्हें हलाक क्या करना है? अुनकी चीज़को समझ लें और फिर आपसमें समझौता क्यों न कर लें? अैसा क्यों हो कि जिसकी सफेद चमड़ी है, वह काली चमड़ीवालेके साथ कुछ बहस नहीं कर सकता? या अगर वहाँके हिन्दुस्तानियोंको सन्तोष देना है, अिन्साफ देना है, तो अुसके लिअे अुन्हें लड़ना क्यों पड़े? अगर हिन्दुस्तानी भी अुसी जगह रहें, तो अुन्हें (गोरोंको) कष्ट क्या हो सकता है? अुन्हें कोअी कष्ट नहीं होना चाहिये। दक्षिण अफ्रीकाकी हुकूमतको हिन्दुस्तानियोंके साथ सलाह-मशविरा करके सलूकसे रहना चाहिये और अुनको सन्तोष दिलाना चाहिये। आज हम भी आज़ाद हैं और वे भी आज़ाद हैं, और अेक ही हुकूमतके हिस्सेदारोंकी हैसियतसे रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका भी अेक डोमिनियन है, और अिण्डियन यूनियन भी अेक डोमिनियन है और पाकिस्तान भी अेक डोमिनियन है। तब सब भाअी-भाअी बनकर रहें, यह अुनके गर्भमें पड़ा है। अिससे अुलटे, वे आपस आपसमें लड़ें और हिन्दुस्तानको अपना दुश्मन मानें — हिन्दुस्तानियोंको जब वहाँ शहरीके हक न मिलें, तो फिर वे दुश्मन नहीं हैं तो और क्या हैं? — तो यह समझमें न आ सके अैसी चीज़ है। क्यों अैसा माना जाय कि जो काली चमड़ीवाले हैं, वे निकम्मे हैं? अगर वे अुद्यम कर सकते हैं और थोड़े पैसेमें रह सकते हैं, तो वह क्या कोअी गुनाह है? लेकिन वह गुनाह बन गया है। अिसलिअे अिस-सभाकी मारफ़त मैं दक्षिण अफ्रीकाकी हुकूमतसे कहना चाहता हूँ कि वे सही रास्ते पर चलें। मैं भी वहाँ २० वर्ष तक रहा हूँ। अिसलिअे मेरा भी वह मुल्क बन गया है, अैसा कह सकता हूँ। यह सब कहना तो मुझे कल चाहिये था, लेकिन कह नहीं पाया।

मैसूरके मुसलमान

मैसूरके मुसलमानोंने कुछ दिन पहले तार भेजा था कि आपके अुपवासका यहाँ कुछ भी असर नहीं हुआ और मुसलमानोंको हलाक किया जा रहा है। अिस बारेमें मैंने कुछ कहा भी था। अुसके अुत्तरमें आज मैसूरके गृह-मंत्रीका तार आया है, जिसमें पहले तारका खंडन किया है और बताया है कि मुसलमानोंके साथ अिन्साफ करनेकी पूरी कोशिश हो रही है। जैसे मैं सबसे कहता हूँ, वैसे मैसूरके मुसलमान भाअियोंसे कहूँगा कि वे किसी चीजके बारेमें अतिशयोक्ति न करें। अैसा करनेसे मेरे हाथ-पाँव बँध जाते हैं और मैं किसी कामका नहीं रहता। मैं पहले भी कह चुका हूँ और फिर मुसलमान भाअियोंसे कहता हूँ कि वे किसी चीजको बढ़ाकर न कहें; अगर कर सकें, तो कुछ कम ही करें। यही रास्ता है हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंके मिल-जुलकर और भाअी-भाअी बनकर रहनेका। अितना बूढ़ा हो गया हूँ, तो भी सारी दुनियामें दूसरा कोअी रास्ता मैंने नहीं पाया।

www.vinoba.in

दानाओंसे दो शब्द

हमारे लोग अैसे भोले हैं कि डाकमें ही पैसे भेज देते हैं। मुझे अपने बापके समयसे तजरबा है। अुनके पास कुछ जेवर था — अेक छोटासा मोती था, लेकिन कीमती था। अुन्होंने वह डाकसे भेज दिया। तबसे मैं जानता हूँ कि अैसा नहीं करना चाहिये। अुसमें कोअी चोरी नहीं है, लेकिन खतरा तो अुठाना ही पड़ता है। कोअी डाकको खोल ले, तो फिर मोती कोअी छिपा थोड़े ही रह सकता है? और पैसे तो अुन्हें फिर भी खरचने ही पड़े, क्योंकि अुसकी पहुँचका तार मँगवाया। तो मेरे पिताको अिस चीजका दुःख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी हैं। वे समझ लेते हैं कि पैसे भेजने हैं, तो कौन अुन्हें बीचमें छुअेगा? आज तक तो खैर अैसे ही पैसे आते रहे हैं। आज तो अेक भाअीने अेक हजारसे अूपरके नोट डाकमें बन्द करके भेज दिये। अुसकी रजिस्ट्री भी नहीं कराअी और न बीमा। जो मामूली टिकट लिफाफे पर लगाते हैं, सो लगाकर भेज दिये। आजकल तो लोग बहुत बिगड़ गये हैं। पैसा खा जाते हैं और रिश्वत भी लेते हैं। लेकिन ये नोट तो मेरे पास आ गये। यह अच्छी बात है, और हमारे पोस्ट आफिसके लिअे यह छोटी बात नहीं कि अिस तरह अितने पैसे सुरक्षित आ जाते हैं। वे देखना भी नहीं चाहते कि भीतर क्या है? जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते हैं, तो दूसरोंको भी भेज देते होंगे। लेकिन पैसे भेजनेवालोंसे मुझे कहना है कि अुन्हें अिस तरहका खतरा नहीं अुठाना चाहिये, क्योंकि आखिर कुछ बदमाश तो रहते ही हैं। डाकको अगर कोअी खोल ले, तो मेरे और जिन हरिजनोंके लिअे अुन्होंने रुपये भेजे हैं, अुनके क्या हाल होनेवाले हैं? और जो दान देनेवाले हैं, अुनके क्या हाल होंगे? तो वे ठीक तरीकेसे रुपये भेजें। अुसपर जो खर्च हो, सो काटकर भले अुतना कम भेजें। डाकखानेमें जो लोग काम करते हैं, अुन्हें तो मैं मुबारकबाद देता हूँ कि वे अिस तरह काम करते हैं कि कोअी घूँस नहीं लेते। बाकी जो सब महकमे हैं, वे भी अैसा ही करें। जो लोगोंका पैसा हो, अुसकी हिफाजत करें। किसीसे रिश्वतका पैसा न लें, तो हम बहुत आगे बढ़ जाते हैं। अैसा लालच किसीको होना ही नहीं चाहिये, और किसीके रास्तमें रखना भी नहीं चाहिये। अिसलिअे मैं अिन दानियोंसे कहूँगा कि आप मनीआर्डर भेज दें। अुसमें कितने पैसे लगते हैं? अैसा भी न करें, तो रजिस्टर्ड पोस्टसे भेज दें। अुसमें पैसा थोड़ा ही ज्यादा लगता है और खैरियतसे सब पहुँच जाता है। अैसा आप न करें कि मामूली डाकसे हजारोंके नोट भेज दिये।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २९-१-'४८

कहनेको चीजें तो काफ़ी पड़ी हैं। आजके लिअे ६ चुनी हैं। १५ मिनटमें जितना कह सकूँगा, कहूँगा। देखता हूँ कि मुझे यहाँ आनेमें थोड़ी देर हो गअी है। वह होनी नहीं चाहिये थी।

बहावलपुरको डेपुटेशन

सुशीला बहन बहावलपुर गअी है। वहाँके दुःखी लोगोंको देखने गअी है। दूसरा कोअी अधिकार तो है नहीं, न हो सकता था। फ्रेण्ड्स् सर्विसके लेसली क्रॉस साहबके साथ वह गअी है। मैंने फ्रेण्ड्स् यूनिटमें से किसीको भेजनेका सोचा था, ताकि वह वहाँके लोगोंको देखे, मिले और मुझे सब हालात बतादे। अुस समय सुशीला बहनके जानेकी बात नहीं थी। लेकिन जब अुसने सुना कि वहाँपर सैकड़ों आदमी बीमार पड़े हैं, तो अुसने मुझे पूछा कि मैं भी जाअूँ क्या? मुझे वह बहुत अच्छा लगा। वह नोआखालीमें काम करती थी, तबसे फ्रेण्ड्स् यूनिटके साथ अुसका सम्पर्क था। वह आखिर कुशल डॉक्टर है और पंजाबके गुजरात जिलाकेकी है। अुसने भी काफ़ी गँवाया है। क्योंकि अुसकी तो वहाँ काफ़ी जायदाद है। फिर भी अुसके दिलमें कोअी लहर पैदा नहीं हुआ। वह गअी है; क्योंकि वह पंजाबी जानती है, हिन्दुस्तानी जानती है। अुर्दू और अंग्रेजी भी जानती है। वह क्रॉस साहबको मदद दे सकेगी। वहाँ जानेमें खतरा है। लेकिन अुसने कहा, मुझको क्या खतरा है? अैसे डरती, तो नोआखाली क्यों जाती? पंजाबमें बहुत लोग मर गये हैं, बिलकुल मटियामेट हो गये हैं, लेकिन मेरा तो अैसा नहीं। खाना-पीना मिलता है, सबकुछ अीश्वर करता है। सो आप भेजेंगे और क्रॉस साहब ले जायेंगे, तो मैं वहाँके लोगोंको देख लूँगी। मैंने क्रॉस साहबसे पूछा, सुशीलाको आपके साथ भेजूँ क्या? वे खुश हो गये। कहने लगे, यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं अुनके मारफ़त वहाँके लोगोंसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूँगा। फ्रेण्ड्समें कोअी हिन्दुस्तानी जाननेवाला रहे, तो बड़ी भारी चीज हो जाती है। सुशीला बहन आवें, अुससे बेहतर क्या हो सकता है? क्रॉस साहब रेडक्रॉसके हैं। रेडक्रॉसके माने यह थे कि लड़ाअीके मरीजोंकी दवादारू करना। अब तो वे लोग दूसरा-तीसरा काम भी करते हैं। यह सवाल कि डॉक्टर सुशीला क्रॉस साहबके साथ गअी है या क्रॉस साहब डॉक्टर सुशीलाके साथ गये हैं, जरा पेचीदा हो जाता है। मगर पेचीदा नहीं है। वे दोनों दोस्त हैं। सेवा-भावसे गये हैं। पैसा कमानेकी तो बात नहीं। क्रॉस साहब मेरे मित्र हैं और सुशीला तो मेरी लड़की है। मैं अुसका बाप हूँ। तो मैंने अुसे बड़ी करनेके लिअे नहीं भेजा, कोअी अैसा न सोचें कि वह तो डॉक्टर है और क्रॉस साहब दूसरे हैं। कौन अूँचा है, कौन नीचा है, अैसा भेदभाव न करें। क्रॉस साहब, औरत साथ हो, तो अुसे आगे कर देते हैं। अपने आपको पीछे रखते हैं। मगर निस्स्वार्थ सेवामें अूँचे-नीचेका भेद नहीं होता। अगर कोअी भेद है, तो क्रॉस साहब बड़े हैं। सुशीला अुनके साथ अुनकी मददके लिअे गअी है। वे दोनों आकर मुझे वहाँके हाल बतावेंगे। मुझे नवाब साहबने लिखा कि मुझे कअी लोग झूठी बातें भी लिख देते हैं, अुन्हें माननेका मेरा क्या अधिकार है? सो मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिये, और क्रॉस साहबको और सुशीला बहनको बहावलपुर भेजा। वहाँके मुसलमानोंका तार आ गया है कि वे वहाँ पहुँच गये हैं। वहाँसे लौटेंगे, तब मुझे सब सही हालात बता देंगे। तीन-चार दिनमें लौटनेवाले थे, मगर कुछ काम निकल आया होगा, सो नहीं आये।

मैं अुनका सेवक हूँ

अभी बन्नूके कुछ भाअी-बहन मेरे पास आ गये थे। शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो थे, पर अैसी हालत नहीं थी कि चल न सकें। हाँ, किसीकी अुँगलीमें घाव लगे थे; कहीं कुछ था, कहीं कुछ था, अैसे थे। मैंने तो अुनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो ब्रजकृष्णजीसे कह दें, लेकिन अितना समझ लें कि मैं अुन्हें भूला नहीं हूँ। वे सब भले आदमी थे। अुनका गुस्सेसे भरा होना स्वाभाविक था, मगर वे मेरी बात मान गये। अेक भाअी थे। वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नहीं। अुन्होंने कहा — "तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? अिससे बेहतर है कि जाओ। बड़े महात्मा हो, तो क्या हुआ? हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमें छोड़ दो। हमें भूल जाओ। भागो।" मैंने पूछा, कहाँ जाअूँ? पीछे अुन्होंने कहा, हिमालय जाओ। तो मैंने डाँटा — वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं। वैसे तो बुजुर्ग हैं, तगड़े हैं, मेरे जैसे पाँच सात आदमियोंको चट कर सकते हैं। मैं तो महात्मा रहा। कमजोर शरीर। घबराहटमें पड़ जाअूँ, तो मेरा क्या हाल होगा? तो मैंने हँसकर कहा, क्या मैं आपके कहनेसे जाअूँ? किसकी बात सुनूँ? कोअी कहता है यहीं रहो, कोअी कहता है जाओ। कोअी डाँटता है, गाली देता है; कोअी तारीफ़ करता है। तो मैं क्या करूँ? अीश्वर जो हुक्म करता है, वही मैं करता हूँ। आप कह सकते हैं, आप अीश्वरको नहीं मानते। तो कमसे कम अितना तो करें कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दें। आप कह सकते

www.vinoba.in

हैं कि अीश्वर तो हम हैं। तब परमेश्वर कहाँ जायगा? अीश्वर तो अेक है। हाँ, यह ठीक है कि पंच परमेश्वर है। मगर यह पंचका सवाल नहीं। दुःखीका बेली परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूँ कि हर अेक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तब अुसका दुःख मेरा दुःख है। आप क्यों मानते हैं कि मैं आपका दुःख नहीं जानता, आपके दुःखमें हिस्सा नहीं लेता, हिन्दुओं और सिक्खोंका मैं दुश्मन हूँ, और मुसलमानोंका दोस्त हूँ? अिस भाअीने मुझे साफ़ साफ़ कह दिया। कोअी गाली देकर लिखते हैं, कोअी विवेकसे लिखते हैं कि हमें छोड़ दो। चाहे हम दोज़खमें जायें। तुमको हमारी क्या पड़ी है? तुम भागो। लेकिन मैं किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हूँ?, किसीके कहनेसे मैं खिदमतगार नहीं बना। किसीके कहनेसे मिट नहीं सकता। अीश्वरकी अिच्छासे मैं जो हूँ, बना हूँ। अीश्वरको जो करना है, करेगा। अीश्वर चाहे तो मुझे मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं अीश्वरकी बात मानता हूँ। मैं हिमालय क्यों नहीं जाता? वहाँ रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। अैसा नहीं कि वहाँ मुझे खाना-पीना-ओढ़ना नहीं मिलेगा — वहाँ जाकर शान्ति मिलेगी। मगर मैं अशान्तिमें से शान्ति चाहता हूँ; नहीं तो अुस अशान्तिमें मर जाना चाहता हूँ। मेरा हिमालय यहाँ है। आप सब हिमालय चलें, तो मुझको भी अपने साथ लेते चलें।

मेहनतकी रोटी

मेरे पास शिकायतें आती हैं — वे सही शिकायतें हैं — कि यहाँ जो शरणार्थी पड़े हैं, अुनको खाना देते हैं, पीना देते हैं, पहननेको देते हैं। जो हो सकता है सब करते हैं, लेकिन वे मेहनत नहीं करना चाहते, काम नहीं करना चाहते। जो अुन लोगोंकी खिदमत करते हैं, अुन्होंने लम्बी चौड़ी शिकायत लिखकर दी है, अुसमें से मैं अितना ही कह देता हूँ। मैंने तो कह दिया है कि अगर दुःख मिटाना चाहते हैं, दुःखमें से सुख निकालना चाहते हैं, दुःखमें भी हिन्दुस्तानकी सेवा करना चाहते हैं — अुसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है — तो दुःखियोंको काम तो करना ही चाहिये। दुःखीको अैसा हक़ नहीं कि वह काम न करे और मौजशौक करे। गीतामें तो कहा है, यज्ञ करो और खाओ — यज्ञ करो और जो शेष रह जाता है, अुसको खाओ। यह मेरे लिअे है और आपके लिअे नहीं है, अैसा नहीं है — यह सबके लिअे है। जो दुःखी हैं, अुनके लिअे भी है। अेक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये। वह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है। जिसके पास पैसा है, वह भी मेहनत करके खाये, तभी बनता है। हाँ, कोअी लाचारी है — पैर नहीं चलते, अंधा है, वृद्ध हो गया है, तो अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा है, वह क्यों न काम करे? जो कोअी जो काम कर सकते हैं, सो करें। शिविरोंमें जो तगड़े लोग पड़े हैं, वे पाखाना भी अुठावें। चरखा चलावें। जो काम कर सकते हैं, सो करें। जो लोग काम करना नहीं जानते, वे लड़कोंको सिखावें। अिस तरह काम लें। लेकिन कोअी कहे कि केम्ब्रिजमें जैसी पढ़ाअी होती थी, वैसी करावें। मैं, मेरा बाबा केम्ब्रिजमें सीखे थे, लड़केको भी वहाँ भेजें, तो वह कैसे हो सकता है? मैं तो अितना ही कहूँगा कि जितने शरणार्थी हैं, वे काम करके खायें, अुन्हें काम करना ही चाहिये।

किसान

आज अेक सज्जन आये थे। अुनका नाम तो मैं भूल गया। अुन्होंने किसानोंकी बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वज़ीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा; क्योंकि यहाँका राजा किसान है। मुझे बचपनसे सिखाया था — अेक कविता है, "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान ज़मीनसे पैदा न करे, तो हम क्या खायेंगे? हिन्दुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम अुसे गुलाम बनाकर बैठे हैं। आज किसान क्या करे? अेम. अे. बने? बी. अे. बने? — अैसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलायेगा। जो आदमी अपनी ज़मीनमें से पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जायेगी। आज जो सड़ा पड़ा है, वह नहीं रहेगा।

मद्रासमें खुराककी तंगी

अन्तमें गांधीजीने कहा, मद्रासमें खुराककी तंगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिअे श्री जयरामदासके पास आये थे कि वे अुस सूबेके लिअे अन्न देनेका बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रासवालोंके अिस रुखसे दुःख होता है। मैं मद्रासके लोगोंको यह समझाना चाहता हूँ कि वे अपने ही सूबेमें मूँगफली, नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थोंके रूपमें काफी खुराक पा सकते हैं। अुनके यहाँ मछली भी काफी हैं, जिन्हें अुनमेंसे ज़्यादातर लोग खाते हैं। तब अुन्हें भीख माँगनेके लिअे बाहर निकलनेकी क्या ज़रूरत है? अुनका चावलका आग्रह रखना — वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते हैं — या चावल न मिलनेपर मजबूरीसे गेहूँ मंजूर करना ठीक नहीं है। चाँवलके आटेमें वे मूँगफली या नारियलका आटा मिला सकते हैं और अिस तरह अकालके मेंढ़ियेको आनेसे रोक सकते हैं। अुन्हें ज़रूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोंको मैं अच्छी तरहसे जानता हूँ और दक्षिण अफ्रीकामें अुस प्रान्तके सभी भाषावाले हिस्सोंके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त अुन्हें रोज़ानाके राशनमें सिर्फ़ डेढ़ पौंड रोटी और अेक औंस शकर दी जाती थी। मगर जहाँ कहीं अुन्होंने रातको डेरा डाला, वहाँ जंगलकी घासमेंसे खाने लायक़ चीज़ें चुनकर और मज़ेसे गाते हुअे अुन्हें पकाकर अुन्होंने मुझे अचरजमें डाल दिया। अैसे सूझबूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मज़दूर थे। और, अीमानदारीसे काम करनेमें ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक ज़रूरतोंकी पूर्ति भरी है।

अवसानसे अेक दिन पहले

[२ फरवरी, १९४८का श्री किशोरलाल भाअीको गांधीजीके हाथका लिखा हुआ अेक पोस्ट कार्ड मिला, जिसकी नकल नीचे दी जाती है।

नोट — श्री शंकरन, सेवाग्राममें हिन्दुस्तानी तालीमी संघमें शिक्षक हैं।

यहाँ 'किया' क्रियाका सम्बन्ध गांधीजीकी "करो या मरो"की प्रतिज्ञासे है, जो अुन्होंने दिल्ली पहुँचने पर ली थी।

'दोनोंको आशीर्वाद'का मतलब है — श्री किशोरलालको और अुनकी पत्नी श्री गोमती बहनको। — सम्पादक]

"नअी दिल्ली, २९-१-'४८

"चि० किशोरलाल,

"आज प्रार्थनाके बाद मैं अपना सारा समय पत्र लिखनेमें बिता रहा हूँ। शंकरनजीकी लड़कीके मरनेके समाचार यहाँ भेजकर तुमने ठीक किया। मैंने अुनको पत्र लिख दिया है। मेरे वहाँ (सेवाग्राम) आनेकी बातको अभी अनिश्चित समझना चाहिये। वहाँ ता० ३ से ता० १२ तक रहनेकी बात मैं चला रहा हूँ। अगर यह कहा जाय कि दिल्लीमें मैंने 'किया' है, तो प्रतिज्ञा-पालनके लिअे मेरा यहाँ रहना अब ज़रूरी नहीं है। अिसका आधार यहाँके मेरे साथियोंपर है। शायद कल निश्चय किया जा सकेगा। मेरे आनेका मक़सद अेक तो अिसपर विचार करना है कि रचनात्मक काम करनेवाली सारी संस्थायें अेक हो सकती हैं, या नहीं और दूसरा जमनालालकी पुण्यतिथि मनाना है। मुझमें ठीक शक्ति आ रही है। अिस बार किडनी और लिवर दोनों बिगड़े हैं। मेरी दृष्टिसे यह रामनाममें विश्वासके कच्चेपनकी वजहसे है।

(गुजरातीसे) "दोनोंको आशीर्वाद।"

www.vinoba.in

हमारा फर्ज़

समय जब बहुत दूरके धुंधले भविष्यकी ओर तेजीसे बढ़ेगा और सैकड़ों हजारों बरस बीत जायँगे, तब भी गांधीजी और अुनके महान बलिदानकी प्रतिध्वनि नित्यताकी हमेशा पीछे हटती जानेवाली दीवालोंसे टकराकर वापिस लौटेगी। दुनियाके अितिहासमें कोअी आदमी अपने जीवनमें गांधीजी जैसा निर्दोष नहीं रहा, कोअी आदमी गांधीजीकी तरह अपनी जान कुरबान करके मानवताके अूँचे-से-अूँचे अुसूलोंका सम्मान नहीं कर सका। हम गांधीजीके अितने ज़्यादा नजदीक हैं कि अुनकी अूँचाअीको नहीं माप सकते। युगों बाद आनेवाली पीढ़ियाँ अुस आत्माकी सच्ची महत्ताकी सही सही कीमत करेंगी, जो अिस तरह अचानक अिस दुनियासे चली गअी।

जैसे अेक हीरेके कअी पहलू होते हैं, अुसी तरह गांधीजीके जीवनके भी कअी पहलू थे। हालाँकि मनुष्य-जातिकी सेवाके लिअे अुन्होंने तरह तरहके काम किये, फिर भी अेक ही अूँचा मकसद अुन सबको प्रेरणा देनेवाला था। वह अूँचा मकसद था मनुष्यताके नियमके मुताबिक — अहिंसाके नामसे पहचाने जानेवाले प्रेमके नियमके मुताबिक जीवन बिताना। मनुष्यको पशुके स्वभाव और अुसकी भावनाओंसे अूपर अुठना है। मनुष्य जिस हद तक अुनसे अूपर अुठता है, अुसी हद तक वह मनुष्य है। नैतिक क्षेत्रमें मनुष्यकी प्रगति ही सच्ची प्रगति है। गांधीजीने अपने जीवनके ६० लम्बे और कठिन परीक्षाके बरसोंमें अपने आपको प्रति घंटे अिसी तरह गढ़ा और अपनेको क्रोध, द्वेष, अीर्षा, मोह वगैराकी अुन बुनियादी भावनाओंसे अूपर अुठाया, जो मनुष्यको अपनी पशु-योनिसे विरासतमें मिली हैं। अुन्होंने अिस बातपर अमल किया और अपने अमलके मारफत दुनियाको प्राणिमात्रके लिअे प्यारके बुनियादी मानवी गुणका अुपदेश दिया।

जिस हिन्दू धर्ममें वह पैदा हुअे थे, अुसकी यह बुनियादी तालीम भी है। लेकिन अुन्होंने हिन्दू धर्मकी अिस तालीमके मुताबिक़ जीवन बितानेका साहस किया, अिसलिअे अुनकी अेक हिन्दूके हाथों हिन्दू-हितोंके नामपर हत्या हुअी। मगर वह हिन्दू हत्यारा सचमुच अुस ज़हनियतका बहुत बड़ा प्रतिनिधि है, जिसका अस्तित्व अुस सिद्धान्तका विरोध करनेके लिअे है, जिसके लिअे गांधीजी जिये और अुन्होंने काम किया। वह ज़हनियत नफ़रत और ग़ैर-रवादारीकी निशानी है। वह दूसरोंको विरोधी मत रखने और अुसका प्रचार करनेका हक़ नहीं देना चाहती। मगर वे जानका खतरा अुठाकर ही अैसा कर सकते थे। ग़ैर-रवादारीके अिस राक्षसका प्रगट होना हिन्दुस्तानके लिअे खतरेकी चेतावनी है। अुसका भविष्य अन्धकारमें है, अुसकी आत्मा ही खतरेमें है। घृणासे घृणा ही पैदा होती है। वह अेक अैसा शस्त्र है, जो सामनेवालेको चोट पहुँचाकर ज़रूर वापस लौटता है। हिन्दू समाज खुद-कुशी कर रहा है।

बापू दुनियासे चले गये हैं। और फिर भी जब क़लमसे यह बात निकल पड़ती है, तो दिमाग विरोध करता है कि बापू कभी नहीं मर सकते। वह देवताओंकी कोटिके व्यक्ति हैं। अुनका जीवित असर हिन्दुस्तानमें करोड़ोंके जीवनको और चीज़ोंके रूपको आकार देगा। अैसा चाहनेवाले सबको अुनके प्रति वफ़ादार रहना चाहिये। अुनके काम हमारे काम बनें: फिर भले अुनका भार अुठानेके लिअे हम कमज़ोर ही क्यों न हों। भगवान हमें अपना फ़र्ज़ अदा करनेके लिअे ज़रूरी श्रद्धा और शक्ति दे।

(अंग्रेजीसे)

जयरामदास

गांधीजीकी दिल्ली-डायरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिरने थोड़े ही समयमें गांधीजीकी 'दिल्ली-डायरी' प्रकाशित करनेका निश्चय किया है। आज़ाद हिन्दुस्तानकी राजधानीमें आखिरी बार रहकर अुन्होंने शामकी प्रार्थनामें जो भाषण दिये, अुनका समावेश अिस किताबमें किया जायगा। यह किताब अंग्रेजी, गुजराती और हिन्दुस्तानी तीन भाषाओंमें प्रकाशित होगी।

अहमदाबाद, ३-२-'४८ जीवणजी देसाअी

कौन मरा?

पूज्य बापूजीको कौन मार सकता था? वे तो कबसे ही अमर हो चुके थे। अुन्हें गोली मारनेवालेने तो अुनको सुकरात, कृष्ण, और अीसा मसीहकी श्रेणीमें बैठाकर अुनकी अमरतापर मोहर लगादी। जो गोलियाँ छूटीं, वे गांधीजीके जीवनका खात्मा नहीं कर सकीं। अुनका महान् जीवन तो और भी ज़्यादा लम्बा हो गया है। मगर अिन गोलियोंने छोड़नेवालेके अपने ही धर्मको मारा है और अपने ही व्यक्तियोंका नुकसान किया है। सुकरातको मारकर ग्रीसवालोंने जिस तरह अपना नुक़सान किया, कृष्णको मारकर यादवोंने किया, और अीसा मसीहको मारकर यहूदियोंने किया, अुसी तरह अिस भाअीने गांधीको मारकर हिन्दू जनताका और हिन्दू धर्मका नुकसान किया है। अगरचे वियोगके आँसू गिरे बिना रह नहीं सकते, फिर भी बापूके लिअे आँसू बहाने जैसी कोअी बात नहीं है। सहानुभूतिके पात्र बापू या बापूके सगे-सम्बन्धी और भक्त नहीं, बल्कि पागल बने हुअे फ़िरक़ापरस्त लोग हैं।

(गुजरातीसे)

वर्धा, ३१-१-'४८ किशोरलाल घ० मशरूवाला

महात्माजीको सच्ची अंजलि

पूज्य बापूजी गये। सिर्फ राम-नाम ही अुन्हें जीवनमें बड़ी धीरज बँधाता था। देशको भी वही नाम धीरज बँधा सकता है।

अुनके पीछे शोक नहीं करना चाहिये। भाषण नहीं देने चाहियें। और अुनका स्मारक क्या हो? अुसे तो वे खुद ही अहिंसाके प्रतीक चरखेके रूपमें देशके पास विरासतमें रखते गये हैं। जो लोग चरखेकी पूरी खूबीको अुनके जीतेजी न समझ सके हों, वे अब अुनकी मृत्युसे अुसे समझें।

देशने पूज्य कस्तूरबाके स्मारकमें अेक करोड़ रुपये दिये थे। अब देश पूज्य बापूजीके स्मारकमें अेक करोड़ कातनेवाले दे।

गीता पूज्य बापूजीके लिअे जीवनका सहारा रही। हम सब भी अेक बरसमें गीताका अभ्यास करके अुसे अपने जीवनका सहारा बनावें।

राष्ट्रीयशाला, राजकोट, १-२-'४८.

(गुजरातीसे)

नारणदास गांधी

हिन्दुस्तानी परीक्षाअें

गूजरात हिन्दुस्तानी प्रचार समितिकी परीक्षाअें ता० १४-१५ फरवरी, १९४८को शनिवार और रविवारके रोज़ होंगी। चारों परीक्षाओंका समय-पत्रक नीचे लिखे अनुसार है —

शनिवार, ता० १४-२-'४८

शामको २-३० से ५-३०

तीसरी परीक्षा — प्रश्नपत्र १ चौथी परीक्षा — प्रश्नपत्र १

रविवार, ता० १५-२-'४८

सुबह १०-३० से १-३०

पहली परीक्षा — प्रश्नपत्र दूसरी परीक्षा — प्रश्नपत्र

तीसरी परीक्षा — प्रश्नपत्र २ चौथी परीक्षा — प्रश्नपत्र २

शामको २-३० से ५-३०

चौथी परीक्षा — प्रश्नपत्र ३ दूसरी और तीसरी परीक्षाका मौखिक

चौथीकी मौखिक परीक्षा ता० १६-२-'४८ को सोमवारके रोज़ सुबह होगी। जिन केन्द्राका ज़बानी अिम्तहान अूपर दिये गये वक़्तपर नहीं होगा, अुन केन्द्रोंको अुस अिम्तहानकी तारीखकी सूचना दी जायगी।

गू० हिं० प्रचार समिति, गिरिराज
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद ९ परीक्षा-मन्त्री

विषय-सूची

		पृष्ठ
यमुना-तटकी राखमें से	... राजेन्द्रप्रसाद	१७
बापू जीवित हैं	... सुशीला नय्यर	१८
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	२०
अवसानके अेक दिन पहले	...	२३
हमारा फर्ज़	... जयरामदास	२४
कौन मरा?	... किशोरलाल मशरूवाला	२४
महात्माजीको सच्ची अंजलि	... नारणदास गांधी	२४
टिप्पणी —		
हिन्दुस्तानी परीक्षाअें	... गिरिराज	२४

www.vinoba.in